15

वर्षा ऋतु

रिमझिम	आँगन	सुंदरता	मेघ	सरिता	संगीत	सौंदर्य
हरियाली	अंकुर	इतराए	छवि	मधुर	उपवन	घनघोर

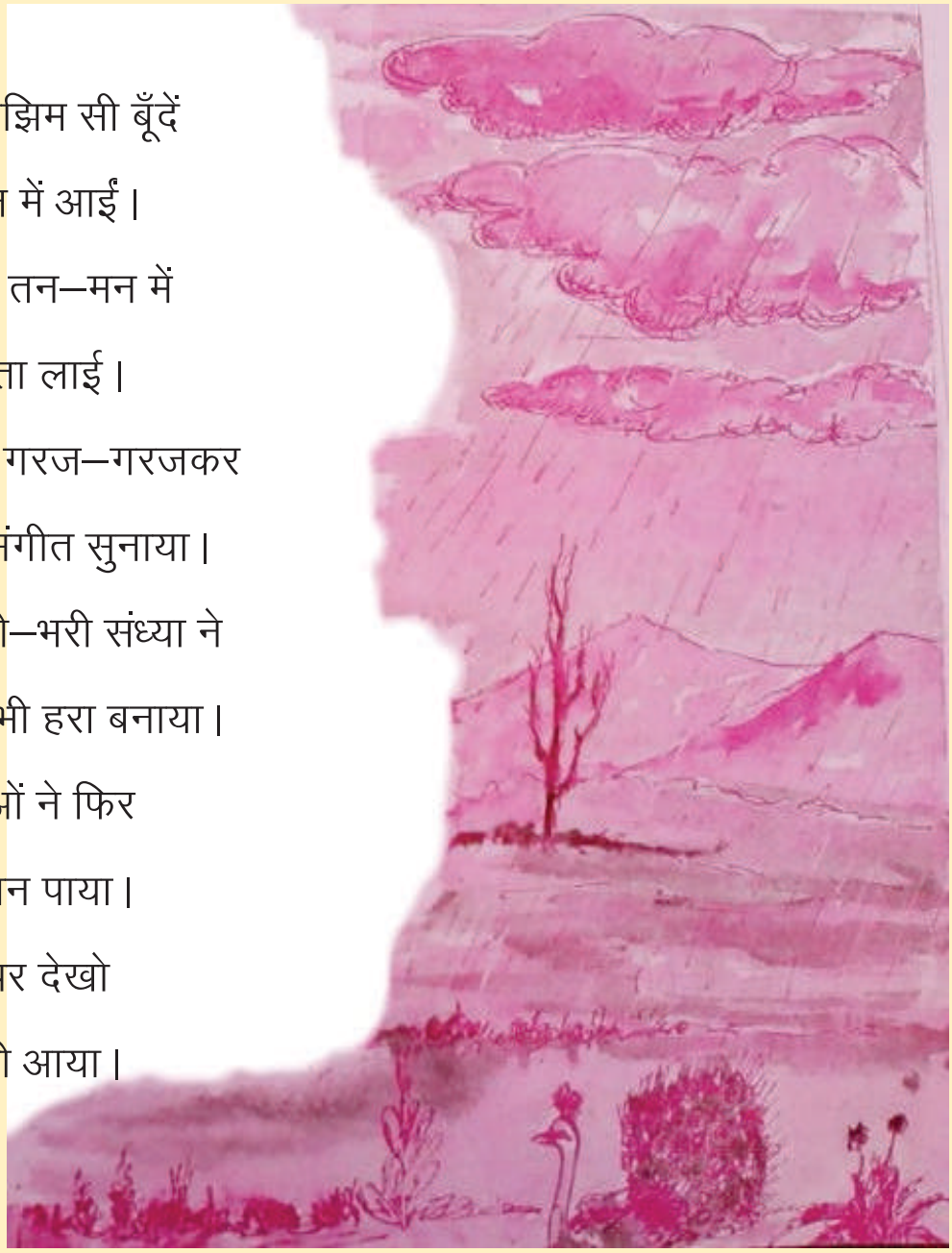

रिमझिम–रिमझिम सी बूँदें
जग के आँगन में आईं।
अपने छोटे से तन–मन में
कितनी सुंदरता लाई।

मेघों ने गरज–गरजकर
प्यारा संगीत सुनाया।
इस हरी–भरी संध्या ने
हमको भी हरा बनाया।

सूखी सरिताओं ने फिर
ताजा नवजीवन पाया।
छोटी लहरों पर देखो
सौंदर्य नया ही आया।

वन–उपवन पनप गए सब

नव अंकुर खिल–खिल आए
पेड़ और पौधे हरियाली के
वस्त्र पहन इतराए।

वन में मयूर जब नाचे,
गाएँ आनंद मनाएँ।
उनकी छवि देख रही हैं
नभ से घनघोर घटाएँ।

हम झूलें, डोलें, खेलें
जीवन को मधुर बनाएँ
सब अपने–अपने घर में
सुख का संसार बसाएँ।

अभ्यास

1. उत्तर लिखें :

क) मेघ गरज–गरज कर क्या सुनाते हैं ?

.....

ख) वर्षा–ऋतु में सूखी नदियों की स्थिति क्या हो जाती है ?

.....

ग) वर्षा–ऋतु में मयूर क्या करते हैं ?

.....

घ) वर्षा–ऋतु में पेड़–पौधे कैसे लगते हैं?

उद्देश्य :– पाठ–बोध तथा प्रत्यास्मरण।

2. इन पंक्तियों को पूरा करें :–

क) रिमझिम–रिमझिम सी बूँदें

.....

अपने छोटे से .....

.....

ख) सूखी .....

ताजा.....

छोटी लहरों पर देखे

.....

उद्देश्यः– पाठ का प्रत्यास्मरण।

3. अर्थ स्पष्ट करें :–

वन–उपवन पनप गए सब

नव अंकुर खिल–खिल आए

पेड़ और पौधे हरियाली के

वस्त्र पहन इतराए।

.....

.....

.....

.....

.

उद्देश्यः– अर्थ–बोध।

4. इस कविता को पढ़ें और इसका भाव अपने शब्दों में लिखें।

.....

.....

उद्देश्यः– भाव–बोध

5. इस कविता को कंठस्थ करें और कक्षा में सुनाएँ।

उद्देश्य :– कविता में लय व तुक का ज्ञान।

6. अध्यापक की सहायता से विभिन्न ऋतुओं की जानकारी प्राप्त करें।

उद्देश्य :– योग्यता–विस्तार।

7. इस कविता की जो पंक्तियाँ आपको अच्छी लगीं उनके आधार पर चित्र बनाएँ:

उद्देश्यः– सृजनात्मक शक्ति का विकास।

8. शब्दार्थ :–

मेघ	–	बादल	सरिता	–	नदी।
सौंदर्य	–	सुंदरता	उपवन	–	बाग।
छवि	–	सुंदरता			
अंकुर	–	बीज से फूटता पौधा			

उद्देश्यः– शब्दार्थ–ज्ञान।